ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 54-58

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

उत्तराखंड राज्य की भौगोलिक एवं आर्थिक परिदृष्य के अध्ययन की आलोचनात्मक व्याख्या

डॉ0 ज्योति कुमार पंकज

अस्सिटेंट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, गोड्डा कॉलेज, गोड्डा, सि0 का0 मु0 वि0 वि0 दुमका (झारखण्ड) भारत

Received-05.10.2022, Revised-11.10.2022, Accepted-16.10.2022 E-mail: pankaj_panthi@yahoo.co.in

सारांशः ***देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध भारत का 27 वाँ राज्य उत्तराखंड प्राकृतिक दृष्टिकोण से समृद्ध धर्मनगरी के रूप में विख्यात सभी धर्मों के अनुवाइयों एव तीर्थयत्रियों के लिए महत्तवपूर्ण पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता हैं। उत्तराखंड राज्य पर कुषाणों, कुनिंदों, कनिष्क, समुद्रगुप्त पौरवों, कत्यूरियों, पालों, चंद्रों, पंवारों के अलावा ब्रिटिश शासकों ने भी शासन किया। निवनिर्मित उत्तराखंड राज्य प्रारंभ में आगरा तथा अवध संयुक्त प्रांत का भाग रहा। सन् 1902 में यह प्रांत अस्तित्व में आया। सन् 1935 से इसे संयुक्त प्रांत के नाम से जाने जाना लगा जबकि जनवरी 1950 में इसका नाम उत्तर प्रदेश कर दिया गया।***

9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश से अलग कर उत्तराखंड राज्य बना दिया गया। उत्तराखंड प्राकृतिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से सम्पन्न, परंतु विकट क्षेत्र वाला राज्य है। इसलिए अन्य राज्यों की तुलना में यहाँ आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था में कई स्तरों पर भिन्नता पायी जाती है। आज भी ग्रामीण जनसंख्या की एक बड़ी आबादी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ है और गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करने को विवश है। उत्तराखंड राज्य की भौगोलिक संरचना जटिल एवं अधिकतर पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां की जलवायु में विविधता पायी जाती है। यह राज्य शीत जलवायु श्रेणी में आता है। आर्थिक परिदृश्य के अध्ययन के आधार पर देखा जाय तो वर्ष 2011–12 में राज्य घरेलू उत्पाद में प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा 14 प्रतिशत था जो वर्ष 2017–18 में घटकर 10.50 तथा 2019–20 में 10.20 प्रतिशत हो गया। अर्थात प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि क्षेत्र का योगदान निरंतर गिरता जा रहा है जो चिंतनीय है। वर्ष 2011–12 में फसल क्षेत्र का हिस्सा 7.05 प्रतिशत से गिर कर 2017–18 में 4.56 प्रतिशत रह गया।

कुंजीभूत शब्द– धर्मनगरी, अनुवाइयों, तीर्थयत्रियों, पवित्र स्थान, अस्तित्व, प्राकृतिक, भौगोलिक दृष्टिकोण, ग्रामीण जनसंख्या।

उत्तराखंड का उल्लेख प्राचिनतम हिन्दू धर्मग्रन्थों में केदारखण्ड, मानसखण्ड तथा हिमवंत के रूप में जाना जाता रहा है। महाभारत के वनपर्व में गंगाद्वार (हरिद्वार) से भृंगतुंग (केदारनाथ) तक की यात्राओं का वर्णन मिलता है। ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, वायु पुराण, तथा अग्निपुरण जैसे ग्रंथों में तीर्थयात्राओं का वर्णन मिलता है। कालिदास द्वारा रचित रघुवंश, कुमार संभव, अभिज्ञान–शंकुतलम तथा आर्यभट्ट की रचित हर्ष रचित में भी उत्तराखंड क्षेत्र की यात्रा का वर्णन मिलता है। हवेनसांग चीनी यात्री का यात्रा विवरण कल्हण की राजतरंगिणी एवं विभिन्न स्थानीय ग्रंथों में उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिदृश्य का वर्णन किया गया है।

उत्तराखंड राज्य पर कुषाणों, कुनिंदों, कनिष्क, समुद्रगुप्त पौरवों, कत्यूरियों, पालों, चंद्रों, पंवारों के अलावा ब्रिटिश शासकों ने भी शासन किया। निवनिर्मित उत्तराखंड राज्य प्रारंभ में आगरा तथा अवध संयुक्त प्रांत का भाग रहा। सन् 1902 में यह प्रांत अस्तित्व में आया। सन् 1935 से इसे संयुक्त प्रांत के नाम से जाने जाना लगा जबकि जनवरी 1950 में इसका नाम उत्तर प्रदेश कर दिया गया। 9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश से अलग कर उत्तराखंड राज्य बना दिया गया। उत्तराखंड प्राकृतिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से सम्पन्न परंतु विकट क्षेत्र वाला राज्य है। इसलिए अन्य राज्यों की तुलना में यहाँ आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था में कई स्तरों पर भिन्नता पायी जाती है। आज भी ग्रामीण जनसंख्या की एक बड़ी आबादी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ है और गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करने को विवश है।

अध्ययन का उद्देश्य–

- उत्तराखंड राजय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- उत्तराखंड राज्य का भौगोलिक परिदृश्य का अध्ययन करना।
- उत्तराखंड राज्य का आर्थिक परिदृश्य का अध्ययन करना।

शोध विधि– यह शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित है। उत्तराखंड राज्य के आर्थिक सर्वनाश पत्र–पत्रिकाएँ, शोध पत्र, पुस्तकें इत्यादी को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र– अध्ययन के क्षेत्र में उत्तराखंड राज्य के भौगोलिक एवं आर्थिक परिदृश्य को लिया गया है।

उत्तराखंड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– प्रागैतिहासिक काल से ही उत्तराखंड अध्यात्मिक शरणस्थली रही है। कुमायूँ

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

से लेकर गढ़वाल एवं उत्तरकाशी क्षेत्र के विस्तार को उत्तराखंड के नाम से जाना जाता रहा है। जहाँ ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों, स्मृतियों, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक तीर्थस्थलों की विशिष्ट पहचान के कारण यह राज्य अपना एक महत्तवपूर्ण स्थान रखता है। उत्तराखंड के इतिहास को ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक जैसे–विलुप्त संस्कृतियों के अवशेषों, सांस्कृतिक स्थलों, साहित्यिक रचनायें, धार्मिक अनुवायियों की यात्रायें प्राचीन मंदिरों एवं कलाकृतियों अभिलेखों में किये गये वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि इसका अस्तित्व बहुत पुराना रहा है। ऑग्ल विद्वान ई0 एस0 ओकले की पुस्तक होली–हिमालय में इसके इतिहास का वर्णन मिलता है। जिम कार्बेट द्वारा दी मैन ईटर ऑफ कुमायूँ एवं दी मैन ईटर ऑफ रूद्र प्रयाग में इसकी प्राकृतिक सौंदयता का बहुत सुंदर वर्णन किया गया हैं। प्रसिद्ध भू–गर्भशास्त्री मिडलीकट ने मैन्युअल ऑफ इण्डियन जियोलॉजी में इस क्षेत्र के बारे में विस्तार से उल्लेख किया है। स्कंद पुराण तथा महाभारत में इस क्षेत्र को देवताओं का निवास और एक पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता था। 620 ई0 पूर्व में चीनी यात्री हृवेन सांग 700 ई0 पूर्व चंद राजवंश, 8वीं शताब्दी के मध्य गोरखा विजय 9वीं–11वीं सदी तक कत्यूरी राजवंश का शासन बसंत देव का राजवंश, खर्परदेव का राजवंश राजबिंर, सलोणदित्य, पालवंश, क्रायल देव, आसंति देव 1358 में परमार वंश के राजा अजय पाल, 14वीं से 15वीं सदी चंद वंश का शासन, 1437 में राजा भारती चंद 1500 के दशक में मुगलों का शासन 1610 में अंग्रेजी यात्री विलियम फिंच, 1591–1611 तक राजा मानशाह, 1624 में राजा महिपत शाह, 1638 राजा बाज बहादुर चंद, 1650 में राजा पृथ्वी पट शाह, 1667–1715 राजा फतेह शाह का शासन काल, 1716–72 राजा प्रदीप शाह, 1780–1781 राजा जयकुल शाह, 1790–91 में गोरखाओं का युद्ध, 1794–95 का अकाल, 1804–1815 गोरखाशासन, 1814–15 एग्लों गोरख युद्ध, 1824 सुर्दशन शाह, 1857 का विद्रोह 1866 शोधकर्ता नैन सिंह रावत 1887 में अखिल गढ़वाल रेजिमेंट 39 वीं गढ़वाल राइफल्स की स्थापना इत्यादि ऐसे ऐतिहासिक विवरण उत्तराखंड के इतिहास को दर्शातें है। अध्ययन के आधार कहा जा सकता है कि भारतीय इतिहास में उत्तराखंड राज्य का इतिहास अपना महत्तवपूर्ण स्थान रखता है।

सिंगौली संधि के बाद अंग्रेजी ब्रिटिश शासन ने यहाँ की भौगोलिक प्राकृतिक संपदा का भरपूर दोहन किया, जो देश की स्वतंत्रता के बाद तक जारी रहा और यही कारण था कि इस अनियंत्रित दोहन तथा राज्य के निवासियों के विकास की अनदेखी ने यहाँ एक अलग राज्य बनाने का आंदोलन छेड़ दिया, जबकि 1897 ई0 में ही इसकी माँग होने लगी थी। 1923 ई0 में पहाड़ी क्षेत्र को संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) से अलग करने की माँग उठायी गई थी। वर्ष 1956 में राज्य पुर्नगठन अधिनियम भी बनाया गया परंतु इस क्षेत्र पर ध्यान नहीं दिया गया। वर्ष 1956 से लेकर वर्ष 1999 के मध्य तक लम्बें संघर्ष और आन्दोलन जिसमें उत्तराखंड अगस्त क्रांति, खटीमा काण्ड, मंसूरी काण्ड, बाटा–घाट काण्ड, मुजफ्फरपुर नगर काण्ड, श्रीयंत्र टापू काण्ड, खैट अनशन एवं अधिवेषनों के बाद केन्द्र की सरकार ने उत्तरांचल राज्य निर्माण विधेयक, 2000 उत्तर प्रदेश विधान सभा को भेजा। 27 जुलाई 2000 को यह विधेयक लोकसभा के पटल पर रखा गया और 1 अगस्त, 2000 को लोकसभा तथा 10 अगस्त 2000 को राज्य सभा में पारित कर 28 अगस्त 2000 को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षर कर अधिनियमित कर दिया गया। लगभग 60 दशकों की एक लम्बी लड़ाई और संघर्ष के तदुपरांत 9 नवम्बर, 2000 को भारतीय गणतंत्र के 27 वें राज्य उत्तराखंड का गठन कर दिया गया।

उत्तराखंड राज्य का भौगोलिक परिदृष्य– हिमालय की तराई में स्थित उत्तराखंड राज्य की भौगोलिक अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएँ पूर्व में नेपाल तथा उत्तर में चीन (तिब्बत) उत्तर पश्चिम में हिमाचल प्रदेश एवं दक्षिण में उत्तर प्रदेश से जुड़ा हुआ है। हिमालयी राज्यों में निर्मित उत्तराखंड राज्य की भौगोलिक स्थिति 280 43′ उत्तर से 310 27′ उत्तरी अक्षांश तथा 770 34′ पूर्व से 810 02′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 53483 एवं वन क्षेत्रफल 38000 वर्ग किमी0 का है।[1] उत्तराखंड राज्य का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 1.6 वाँ भाग है, जिसकी अधिकतम लम्बाई 358 किमी0 तथा अधिकतम चौड़ाई 320 किमी0 के साथ देश में क्षेत्रफल की दृष्टिकोण से 18 वाँ स्थान रखता है। यहाँ की 90 प्रतिशत जनसंख्या कृशि कार्यों पर निर्भर है, जबकि राज्य का कुल खेती योग्य क्षेत्रफल 767459 हेक्टेयर का है। प्रदेश की समुद्र तल से अधिकतम ऊँचाई 7816 मीटर है। यह दो डिविजनों में बटा हुआ है। 13 जिलों तथा वर्ष 2018 तक 670 न्याय पंचायतें 7954 ग्राम पंचायतों के साथ, 2011 की जनगणना के अनुसार, यहां की कुल जनसंख्या 100.86 लाख में पुरूषों की 51.38 तथा महिलाओं की 49.48 लाख आबादी थी। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली कुल आबादी की संख्या 70.37 लाख तथा नगरीय जनसंख्या 30.50 लाख है। यहां की कुल आबादी का 18.93 लाख अनुसूचित जाति एवं 2.92 लाख अनु0 जनजाति वर्ग का है।[2]

उत्तराखंड राज्य की भौगोलिक संरचना जटिल एवं अधिकतर पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां की जलवायु में विविधता पायी जाती है। यह राज्य शीत जलवायु श्रेणी में आता है। यहां ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम तापमान 29.4 से 38 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता है। वार्षिक वर्षा का तापमान 150 से 200 सेमी0 तक रहता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

उत्तराखंड राज्य का आर्थिक परिदृश्य– राज्य की अर्थव्यस्था प्राथमिक– क्षेत्र कृषि, पशुपालन, बागवानी, वन द्वितीयक क्षेत्र– खनन एवं विनिर्माण निर्माण एवं तृतीय क्षेत्र– सेवाओं व्यापार, रेस्टोरेंट, होटल तथा अन्य सेवा क्षेत्रों पर टिका हुआ है। तीनों क्षेत्रों के उत्पादन में उतार–चढ़ाव राज्य की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते है। राज्य गठन के साथ ही यह राज्य अपनी भौगोलिक विविधता के साथ विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर है। परम्परागत रूप से उत्तराखंड को दो भागों में विभाजित किया गया है। पश्चिम में गढ़वाल मण्डल तथा पूर्व में कुमाऊ मण्डल क्षेत्र है। तेरह जिलों में नौ जिलें अलमोड़ा, बागेश्वर, चमोली, चंपावत, पौड़ी गढ़वाल, पिथौरागढ़, रूद्र प्रयाग, टिहरी गढ़वाल तथा उत्तर काशी, हरिद्वार एवं उधम सिंह नगर मैदानी क्षेत्र तथा शेष दो जिलें नैनीताल और देहरादून पहाड़ी और मैदानी दोनों है, इसलिए भारत के अन्य राज्यों की तुलना में यहां की भौगोलिक संरचना भिन्न है।

उत्तराखण्ड राज्य का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। राज्य गठन के समय कृषि क्षेत्रफल का भाग 7.70 लाख हेक्टेयर से घट वर्त्तमान में लगभग 6.98 लाख हेक्टेयर रह गया है। राज्य में जोत का औसत आकार 0.89 हेक्टेयर का है, जबकि कुल कृषि क्षेत्रफल के लगभग 50 प्रतिशत भाग में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, जो औसत से कम है।

आर्थिक परिदृश्य के अध्ययन के आधार पर देखा जाय तो वर्ष 2011–12 में राज्य घरेलू उत्पाद में प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा 14 प्रतिशत था, जो वर्ष 2017–18 में घटकर 10.50 तथा 2019–20 में 10.20 प्रतिशत हो गया, अर्थात प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि क्षेत्र का योगदान निरंतर गिरता जा रहा है जो चिंतनीय है। वर्ष 2011–12 में फसल क्षेत्र का हिस्सा 7.05 प्रतिशत से गिर कर 2017–18 में 4.56 प्रतिशत रह गया।

उत्तराखंड राज्य में खाद्यान्न उत्पादन एवं क्षेत्रफल

वर्ष	क्षेत्रफल हेक्टेयर में	उत्पादन (मी0टन)
2011–12	909.305	1804.03
2012–13	898.974	1811.84
2013–14	872.75	1775.08
2014–15	875.38	1612.96
2015–16	866.78	1756.38
2016–17	867.88	1874.50
2017–18	851.753	1906.006

स्रोत :– कृषि विभाग, उत्तराखंड

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि राज्य में कृषि भूमि क्षेत्रफल लगातार घट रहा है इसका मुख्य कारण आर्थिक विकास औद्योगिकरण एवं आबादी में विस्तार होने से है, परंतु उत्पादकता औसत रूप में बढ़ी है इसका मुख्य कारण उन्नत किस्म के बीज रसायनिक खाद, वैज्ञानिक कृषि एवं नई तकनीक के उपयोग से संभव हो पाया है।

राज्य की चतुर्थ आर्थिक गणना 1998 पंचम 2005 तथा षष्ठम 2013 में कराई गयी थी। इन 15 वर्षों की अवधि में राजकीय अर्थव्यवस्था में कॉफी हद तक परिवर्तन हुए है। चौथी आर्थिक गणना में उद्यमों की संख्या 10505, पंचम में 31880 से बढ़कर छठी में 45002 हो गयी वही इसी अवधि में कृषि उद्यम तथा कार्यरत व्यक्तियों की संख्या 26892, 54460 से बढ़कर 73117 हो गयी। जो चौथी आर्थिक गणना की तुलना में पंचम आर्थिक गणना में 19.7 प्रतिशत ग्रामीण उद्यमों में वृद्धि के साथ पंचम की तुलना में छठी आर्थिक गणना में 37 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शता है। वहीं गैर कृषि उद्यम तथा कार्यरत व्यक्तियों की संख्या चतुर्थ में 204993, पंचम 287241 तथा छठीं में 349177 उद्यम तथा कार्यरत व्यक्तियों की संख्या इसी अवधि में 525222, 618390 तथा 977458 हो गयी।

कृषि तथा गैर कृषि उद्यमों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या में चतुर्थ की तुलना पाँचवी आर्थिक गणना में 21.8 एवं छठी गणना में 56.1 प्रतिशत की वृद्धि उत्साहजनक रही है विश्लेषण से स्पष्ट है कि राज्य की आर्थिक स्थिति में वर्ष दर वर्ष लगातार वृद्धि होती रही है।

राज्य के विकास में उद्योगिक क्षेत्र का भी महत्तवपूर्ण योगदान रहा है। राज्य में अनेक औद्योगिक आयोजनों से बड़ें पैमाने पर निवेश को बढ़ावा मिला है, और यही कारण रहा है कि उत्तराखंड राज्य देश के औद्योगिक मानचित्र पर अपनी अलग पहचान बना लिया है।

वर्ष 1999–2000 में द्वितीय क्षेत्र का योगदान 19.2 प्रतिशत 2019–20 में 48.64 प्रतिशत हो गया, जो औद्योगिक स्थिति के विकास को दर्शाता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

उत्तराखंड राज्य में उद्योगों की स्थिति

वर्ष	उद्योगों की संख्या						
वर्ष	बृहद उद्योग	मध्यम उद्योग	लघु उद्योग	सूक्ष्म उद्योग	योग	पूंजी निवेश (करोड़ रू0 में)	सृजित रोजगार (संख्या)
2018–19	7	29	446	3165	3647	1536.47	20894
2019–20	28	35	501	3596	4131	1731.15	28700
2020–21 जन0 2021	2	31	175	2923	3131	635.47	15846

स्रोत : उद्योग निदेशालय उत्तराखंड

तालिका से स्पष्ट है कि बृहत, मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्योग, पूँजी निवेश में वृद्धि के साथ रोजगार सृजन में तीव्र गति से वृद्धि हुई है।

उत्तराखंड राज्य वन एवं प्राकृतिक संपदा से समृद्ध राज्य है। आईएसएफआर 2017 की रिर्पोट के अनुसार राज्य वन क्षेत्रफल 38000 वर्ग किमी0 का है। जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 71.05 प्रतिशत है।

अलौकिक प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण दोवभूमि उत्तराखंड प्राचीनतम काल से ही देश–विदेश के पर्यटकों के लिए आकर्षक का केद्र रहा है। विष्व प्रसिद्ध चारधाम एवं अनेक धर्मो के पवित्र तीर्थ स्थलों से युक्त पर्यटन की असीम संभावनाओं के साथ राज्य के आर्थिक विकास में पर्यटन क्षेत्र की महत्तवपूर्ण पहचान बनी है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2017–18 में पर्यटन क्षेत्र का योगदान लगभग 13.57 प्रतिशत रहा हैं। वर्ष 2002 में उत्तराखंड में आये पर्यटकों की संख्या 117.08 से बढ़कर 2017 में 347.23 लाख हो गयी जो उत्तरोत्तर वृद्धि को दर्शाता है।

राज्य का सकल घरेलू उत्पादन– वर्ष 2011–12 से 2018–19 तक राज्य सफल घरेलू उत्पाद (प्रचलित कीमतों पर) 2011–12 में 115328 करोड़ रूपये, 2012–13 131613, 2013–14 149074, 2014–15 में 161439, 2015–16 में 177163, 2016–17 में 195125, 2017–18 में (RE) में 22283 करोड़ रूपये से बढ़कर 2018–19 (PE) में 245895 करोड़ रूपये हो गया। वहीं राज्य के विकास में मुख्यतः विनिर्माण का 37.52 प्रतिशत, निर्माण 7.95, प्रतिशत व्यापार होटल एवं जलपान गृह का 14. 96 प्रतिशत तथा परिवहन, भण्डारण संचार एवं प्रसारण का 6.02 प्रतिशत योगदान रहा है। राज्य की आर्थिक विकास दर वर्ष 2012–13 में 7.27 प्रतिशत, 2013–14 में 8.47, 2014–15 में 5.28, 2015–16 में 8.08, 2016–17 में 9.83, 2017–18 (पुनरीक्षित) 7.84 प्रतिशत तथा 2018–19 (अनन्तिम) 6.87 प्रतिशत रहा है। राज्य निवल घरेलू उत्पाद के आधार पर देखा जाय तो वर्ष 2018–19 में प्रचलित कीमतों पर 198738 करोड़ रूपये आकलित की गयी है, जो राष्ट्रीय स्तर से कई गुना अधिक है। वर्ष 2011–12 में उत्तराखण्ड राज्य की प्रति व्यक्ति आय 100305 रूपये, 2012–13 में 113610, 2013–14 में 126247, 2014–15 में 135881, 2015–16 में 147592, 2016–17 में 161172, 2017–18 में 182320 (RE) तथा 2018–19 में बढ़कर 198738 (RE) रूपये हो गयी।

वर्ष 2019–20 में उत्तराखण्ड राज्य का संरचनात्मक अध्ययन के अनन्तिम अनुमानों के तहत प्राथमिक क्षेत्र का 10.20 प्रतिशत, द्वितीय क्षेत्र का 48.64 प्रतिशत एवं तृतीय क्षेत्र का 41.16 प्रतिशत योगदान रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– राज्य निर्माण से लेकर अब तक की अवधियों में राज्य के वास्तविक सफल घरेलू उत्पाद की चक्रवर्ती वार्षिक वृद्धि दर 14.5 प्रतिशत रही है। भौगोलिक समस्याओं एवं लॉजिस्टिक कठिनाईयों के बाद भी राज्य ने विगत वर्षो में निर्यात में निरंतर वृद्धि दर्ज की है वर्ष 2011–12 में निर्यात 3530 करोड़ रूपये, 2012–13 में 6071, 2013–14 में 6782, 2014–15 में 8509, 2015–16 में 7350, 2016–17 में 6011 करोड़ रूपये, 2017–18 में 10837 करोड़ रूपये, 2018–19 में 16285 करोड़ रूपये, 2019–20 में 16971 करोड़ रूपये तथा 2020–21 (अप्रैल से अगस्त 20 तक) 8624 करोड़ रूपये का कोविड अवधि में निर्यात किया गया जो विगत वर्ष 2019–20 में आकलित कुल निर्यात 16971 करोड़ रूपये का लगभग 50 प्रतिशत तुलनात्मक रूप से अधिक है आँकड़ों के अध्ययन से स्पष्ट है कि भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक कठिनाईयों के बाद भी राज्य ने अपने गठन की अवधि से अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों खासकर द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र तीव्र गति से विकास किया है। विगत 20 वर्षो में उत्तराखंड राज्य का आर्थिक विकास निरंतर एवं तीव्र गति से हुआ है परंतु यह विकस का संकेन्द्रण मैदानी क्षेत्रों में अधिक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से कम रहा है क्योंकि Estimation of District Level Poverty in Uttarakhand GIDS, Lucknow, November 2017 की रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2011–12 में पर्वतीय क्षेत्रवालें जनपदों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

में ग्रामीण गरीबी 19.59 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्र में 14.91 प्रतिशत के साथ कुल 19.12 प्रतिशत की आबादी रहती है, जबकि मैदानी क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में 17.70 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्र में 10.67 प्रतिशत के साथ कुल 15.15 प्रतिशत आबादी रहती है। इस तरह राज्य में लगभग 17.52 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है। राज्य के जिलों में यह विषमता स्पष्ट रूप से और अधिक परिलक्षित होती है। आज भी यहां के निवासियों की पलायन की समस्याँ राज्य के लिए एक बड़ी चुनौती है।

उत्तराखण्ड राज्य का अधिकतर हिस्सा पर्वतीय खण्ड होने के कारण इन क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता निम्न रहती है। कुल ग्रामीण किसानों में से 85.9 प्रतिशत सीमांत एवं लघु किसान है। यहाँ की कृषि मानसून पर निर्भर है। जबकि यहाँ के लोगों की मुख्य आजिविका कृषि है। ऐसे में ग्रामीण आबादी का एक बड़ा भाग अपना मूलभूत आवश्यकताओं की आपूर्ति करने में सक्षम नहीं है। राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान, हैदराबाद (ममगाई एवं रेड्डी 2015) की रिपोर्ट में राज्य के संबंध में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि राज्य अधिकतर आर्थिक औसत राज्य के मैदानी क्षेत्रों में संकेद्रित हुए है जिसके चलते पहाड़ी और मैदारनी जिलों में आय की असमानता में भारी अंतर है। और यही अंतर पलायन का मुख्य कारण है। लगभग 20 प्रतिशत श्रमिक शहरी क्षेत्रों में बेहतर आर्थिक संभावनाओं के लिए प्रवास करते हैं। रोजगार का आभाव, शिक्षा, स्वास्थ्य–चिकित्सा जैसी अनेक मूलभूत सुविधाओं में कमी पलायन को बढ़ा देती है। राज्य मे आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पलायन, कृषि, आपदा प्रबंधन, पर्यटन एवं सुशासन जैसी समस्याएँ एक बड़ी चुनौती है। इन चुनौतियों को देखते हुए उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक संरचना को ध्यान में रखकर विकास की नीतियाँ बनायी जानी चाहिए ताकि आने वाले समय में समय के साथ नये रोजगार सृजन किये जा सके। शिक्षा के नये पैर्टन कृषि की आधुनिक तकनीके, पशुपालन, पर्वतीय क्षेत्रों के अनुरूप संरचनात्मक ढांचा विकसित करने, जनभागीदारी के क्रियान्वयन एवं सहभागिता को प्रोत्साहित करने के साथ पर्यटन उद्योग को विकसित कर राज्य की आर्थिक समृद्धि को और तीव्र गति से बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। ताकि मैदानी एवं पर्वतीय क्षेत्रों की विषमताओं को समाप्त किया जा सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Uttrakand at Glance (2017-18) Directorate of Economics and statistics 100/6 Neshvilla Road, Deuradun.
2. i bid
3. Uttrakhand Economics Survey 2016-17, 2017-18, 2018-19, 2019-20, 2020-21
4. Uttarakhand At A Glance 2017-18.
5. www.des.uk.gov.in.
6. www.nelm.nic.in
7. www.jagran.com
8. www.Livehindustan.com
9. The Central Himalayan Panorama: A Study in socio-Economic Development of Uttrakhand, pub.- institute of Social Research and Anthropology.
10. G.S Mehta :- Uttrakhand prospects of Development.
11. देवीदत्त शर्मा : उत्तराखंड का सामाजिक एवं सांस्कृति इतिहास : परिचय।
12. डॉ0 सरिता साह : उत्तराखंड में अध्यातिमक पयटन मंदिर एवं तीर्थ।
13. ग्राम्य विकास एवं पलायन आयोग उत्तराखंड, पौड़ी गढ़वाल : उत्तराखंड के ग्राम पंचायतों में पलायन की स्थिति पर अंतिम रिपोर्ट 2018.
14. सांख्यिकी डायरी उत्तराखंड 2019–20 अर्थ एवं संख्या निदेशालय नियोजन विभाग उत्तराखंड शासन, देहरादून।
15. उत्तराखड राज्य की आर्थिक गणना रिर्पोट–चतुर्थ, पंचम एवं षष्टम।
16. डॉ0 जाकिर हुसैन : उत्तराखंड पृथक राज्य आंदोलन और क्षेत्रीय राजनीति : प्रकाशन बुक डिपो बरेली 1998 उत्तर प्रदेश।
17. वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ भारत 2009 एवं 2020 प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।

*****